अंतस की आहट ...

मनुष्य अपने चित्त की प्रतिध्वनि ही अपने जीवन के सारे अनुभवों में सुनता है। जो आपको बाहर दिखाई देता है; वह आपके अन्तस की छाया मात्र है। बाहर केवल पर्दा है। आप अपने को ही उन पर्दों पर अथवा अपने ही प्रतिबिम्बों को उन पर देखा करते हैं। अगर जीवन में दु:ख व विषाद की स्थिति है तो वही प्रतिबिम्बित होकर जीवन रूपी पर्दे पर दिखाई पड़ता है।

ऐसा समझें कि जगत एक दर्पण है, और हमें अपनी ही तस्वीर उसमें दिखाई पड़ जाती है। लेकिन हम सोचते हैं कि हमें जो दिखाई पड़ रहा है, वह जगत में है। और तब हम उसे जगत से मिटाने की कोशिश में संलग्न हो जाते हैं। यही कोशिश आसान है और यही कोशिश गहरे दु:ख में ले जाती है क्योंकि जिसे हम वहां मिटा रहे हैं, उसका मूल वहां नहीं है। जैसे कि दर्पण में आपको अपनी तस्वीर दिखाई पड़े और लगे कि तस्वीर कुरूप है, और आप दर्पण को तोड़ने लग जाएं। आप दर्पण को तोड़ सकते हैं, लेकिन इससे आपका कुरूप चेहरा बदलेगा नहीं। दर्पण टूटने पर यह भी आभास हो सकता है कि आपको अपनी कुरूप अवस्था दिखाई न पड़े लेकिन न दिखाई पड़ना, मिट जाना नहीं है।

- ब्र.कु.गंगाधर

इसलिए बहुत से लोग समाज छोड़कर भाग जाते हैं क्योंकि समाज में उनकी कुरूपता दिखाई पड़ती है। संबंधों में, संबंधों के दर्पण में उनके भीतर का सब रोग प्रकट होता है। जंगल में व एकांत में कोई दर्पण नहीं रह जाता। उन्हें वहां दिखाई नहीं पड़ता कि वे कैसे हैं और तब इस न दिखाई पड़ने को वे समझ लेते हैं कि आत्मिक रूपांतरण हो रहा है।

यह भ्रांति है। उन्हें वापिस हिमालय से लौटकर आना होगा और जब वह समाज के बीच में खड़े होंगे तब ही उन्हें पता चलेगा कि कुछ मिटा था हिमालय में या दर्पण के न होने से दिखाई नहीं पड़ता था। बिना दूसरे के आप अपने को देख नहीं सकते, दूसरे की मौजूदगी, दूसरे के समक्ष आपको खुद को प्रकट करने की सुविधा हो जाती है।

कैसे क्रोध करिएगा अगर कोई मौजूद न हो? तो क्रोध को मिटाने के दो रास्ते हैं, या तो क्रोध को मिटाइए या दूसरे की मौजूदगी से भाग जाइए। कैसे परिग्रह करेंगे, कैसे अहंकार को निर्मित करेंगे – अगर दूसरा मौजूद न हो? अगर जमीन पर आप बिल्कुल अकेले हो, तो क्या करिएगा? किस बात का लोभ करिएगा? लोभ का अर्थ ही क्या होगा? पूरी जमीन ही आपके अकेले के लिए है। कहां बागुड़ बनाइएगा? कहां मकान की दीवार रेखा खींचिएगा। कहां दावा करिएगा कि यह मेरा है? अकेले होंगे तो दावे का कोई अर्थ नहीं। दावा तो दूसरे के खिलाफ है। दूसरे की मौजूदगी चाहिए।

अहंकार की घोषणा का क्या करिएगा? क्या कहिएगा कि मैं सिकंदर हूँ, कि मैं नेपोलियन हूँ? क्या प्रयोजन होगा? किससे कहिएगा और कौन सुनेगा? कौन आपकी तरफ आंख उठाकर देखेगा कि आप सिकंदर हैं? कहीं अहंकार का भी कोई अर्थ न होगा और विनम्रता को साधिएगा तो क्या सार है? किसको खबर करिएगा कि मुझ जैसा कोई विनम्र नहीं है?

आप अकेले होंगे तो आप बड़ी मुश्किल में पड़ेंगे क्योंकि आपके भीतर जो भी छिपा है, उसे प्रकट करने के लिए कोई भी सुविधा न होगी। यह भी हो सकता है कि आपको पता न चले कि आपके भीतर क्या-क्या छिपा है।

इसलिए जो सन्यास समाज को छोड़कर फलता-फूलता है, वह सन्यास कच्चा है। वह टूट जाएगा। वह भयभीत है, वह सुरक्षा में ही जी सकता है। एक विशेष स्थिति उपलब्ध हो तो ही बच सकता है। सामान्य जीवन में, खुले आकाश के नीचे उसका रंग-रोगन उतर जाएगा। समाज के भीतर फलित होते सन्यास को ही मैं वास्तविक कहता हूँ क्योंकि वहां दर्पण मौजूद है और आपने दर्पण नहीं तोड़े बल्कि दर्पण में अपनी कुरूप तस्वीर देखकर अपने को बदलने की कोशिश की और सुंदर बनाया।

- शेष पेज 10 पर...

शुद्ध, शांत एवं दृढ़ क्वालिटी वाले संकल्प हों

जिसे याद है मैं कौन, मेरा कौन, उसे खुशी का पारा चढ़ा हुआ है। दिल में अगर बाबा है तो दिल खुश हो जाती है क्योंकि खुशी जैसी खुराक नहीं है। तो फिर वह औरों को भी खुश करते रहेंगे, खुश रह खुशी बाटेंगे। दिल में बाबा होने से बाबा की बहुत बातें याद आती हैं। चिंतन में बाबा आने से उसकी सारी चिंतायें मिट जाती हैं। जहाँ सर्वशक्तिमान बाप साथ है, वहाँ डरने की क्या बात है। जो अच्छे बच्चे हैं उनको बाबा ही दिखाई पड़ता है। बाबा का प्यार, सूक्ष्म हमारी आत्मा में शान्ति और शक्ति भर रहा है। जबसे बाबा के बने हैं, कोई बात मुश्किल नहीं है।

हिंसा, सत्यता से खत्म होती है, जहाँ सत्यता है वहाँ अहिंसा है, सत्यता शक्ति देती है। सच्चाई में शान्ति है। जिसे सच्चाई की शक्ति का अनुभव होता है, उसके पास हिम्मत है, हिम्मत है तो बाबा की मदद है। पहले साथ दिया साथी बनाने के लिए, अभी साथी बनाया है सेवा के लिए इसलिए सेवा में बाबा के साथ रहो, भगवान हमारा साथी है तो क्या करेगा काज़ी! सच्ची दिल पे साहेब राज़ी। जहाँ साहेब राज़ी सब काम सहज है। बाबा की याद में सेवा करो। तो अपने ऊपर ध्यान रखने से संकल्प हमारा शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ, दृढ़ क्वालिटी वाला होगा। फिर बाबा अन्दर ही अन्दर और बल भरेगा। जहाँ सच्चाई और प्रेम है, वहाँ कोई कमी नहीं है।

भारतवासी धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो गये हैं गोया अपने ही देवी-देवता धर्म की ग्लानि कर रहे हैं। अपने को हिन्दू कहलाते हैं। यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत....ऐसे भारत में ही भगवान आया है और आकर सत् धर्म की स्थापना कर रहा है, इससे अधर्म का विनाश आपे ही हो जाता है। जहाँ सच्चाई और सफाई है, वहाँ कोई कमी नहीं है। सुख पूछना हो तो हम बच्चों से पूछो। संसार में दु:ख बहुत है इसलिए बाबा कहते अब तुम भी मेरे समान दु:ख -हर्ता सुख-कर्ता बन जाओ, तो बाबा तुम पर बहुत खुश हो जाएगा। जिनके कर्म सुधरेंगे वही सतयुग में आयेंगे। सतयुग में आने के लिए श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं, उसी के लिए सभी तैयारी कर रहे हैं। पवित्र बन रहे हैं, कर्मातीत बन रहे हैं। अगर स्व-चिन्तन नहीं तो चिंता है, तो दु:ख है, दु:ख है तो भय है। कल क्या होगा? किसी में विश्वास नहीं है, कौन करेगा? इसी चिन्तन में टाइम वेस्ट करते रहेंगे। तो सफलता नहीं मिलेगी।

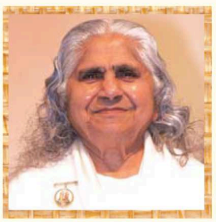

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

अच्छा पुरुषार्थ करने का खाता बढ़ाओ, शिवबाबा मेरा बाबा है, सेवा मेरा भाग्य है। तो भाग्यवान हैं जो सेवा में बाबा ने अपना बनाके रखा है। जितने अच्छे कर्म करते हैं उतनी कईयों के दिल से दुआयें निकलती हैं। पुण्य कर्म का खाता, अचानक कोई कहाँ भी प्रॉबलम में है तो ऐसे समय दुआयें ही काम करती हैं। जो पद का ख्याल रखते हैं वो सच्चाई और प्रेम, खुशी और शक्ति से अपनी जीवन यात्रा सफल करते हैं, वही राजाई पद पाते हैं। फिर भी कहेंगे हर बात में बाबा साथ हैं तो डरने की क्या बात है।

पाण्डव भवन बोलने से ही बाबा याद आता है

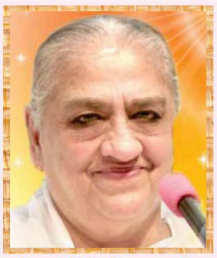

दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

हम तो एक-एक के मस्तक में उसका छिपा हुआ भाग्य देख रहे हैं क्योंकि पाण्डव भवन बोलने से ही बाबा याद आता है क्योंकि पाण्डव भवन में क्या है! तो कहेंगे बाबा का कमरा बहुत अच्छा है, झोपड़ी बहुत अच्छी है। बाबा रहके गया है यहाँ, कमाल तो यह है। तो हमारा भाग्य क्या है? क्योंकि दो ही शब्द हैं भगवान और भाग्य। तो भाग्य में आप लोगों को स्थान भी मिला है, सब दूर-दूर से आते हैं बाबा का कमरा देखने के लिए और आप तो जैसे बाबा के कमरे में रहते हैं। जब चाहे तब बाबा के कमरे में जाओ, बाबा से बातें करो और बाबा जवाब भी देता है। कोई भी मन की बात अगर बाबा के आगे रखेंगे तो बाबा जवाब जरुर देता है, ऐसा अनुभव है?

तो बाबा अभी हमसे क्या चाहते हैं? क्योंकि प्यार जिससे होता है वो जो भी चाहता है, वो करने के लिए तैयार हो जाते हैं। तो बाबा कहता क्या है? एक ही बात कहता है, सदा हर बच्चे का मुखड़ा हर्षितमुख रहे। बातें तो होती हैं, संगठन है ना, वो तो होंगी क्योंकि सब एक जैसे तो नहीं हैं ना, नम्बरवार तो होते ही हैं लेकिन बातों का प्रभाव शक्ल पर नहीं हो। बाबा की याद का, बाबा के स्थान का भाग्य हमारी शक्ल में दिखाई दे।

हमने देखा कहाँ भी जायेंगे आयेंगे, बाबा का कमरा क्रॉस करते हैं और बाबा का कमरा देख करके आपको सारी बाबा की हिस्ट्री याद आ जाती है। तो इतना भाग्य है आपका, जो आपको पाण्डव भवन में रहने के लिए मिला है, सेवा के लिए मिला है। तो आप अपने भाग्य को स्मृति में रख सेवा करते हो? वाह मेरा भाग्य!

यही बाबा चाहता है, जैसे बाबा का चेहरा सदा मुस्कराता हुआ देखा, ऐसे कोई भी बातें हो जाये तो भी हमारी हर्षितमुखता में फर्क नहीं दिखाई दे, यह हो सकता है? होता है? इसमें कभी-कभी... फिर भी लक है आपका। तो सभी खुश हैं! कम्बाइण्ड हो? बाबा को दिल में पक्का बिठाया है! तो पुरुषार्थ में कभी अपने को अकेला नहीं समझना। अकेला देख माया वार कर देती है। कम्बाइण्ड रहो तो माया कभी वार नहीं करेगी। अगर दिल में सदा बाबा ही है फिर तो आप अकेले हो ही नहीं। जहाँ कम्बाइण्ड हैं वहाँ कुछ नहीं हो सकता है। तो अपने इस कम्बाइण्ड स्वरूप में सदा स्थित रहो क्योंकि कहाँ रहते हो! पाण्डव भवन में, पाण्डव भवन कहाँ है जहाँ बाबा रहता था। तो कितने नशे की बात है! तो कभी कोई आपका अचानक फोटो निकाले तो आपकी खुशी के चेहरे को देख ऐसा लगे कि यह बाबा के साथ रहते हैं, पाण्डव भवन के पाण्डव हैं। तो अपने भाग्य को आपेही देखो। हम भगवान का गायन करते हैं और भगवान हम बच्चों के भाग्य का वर्णन करते हैं, जिसके गुण भगवान गाये वो कितना महान हुआ! तो सदा आपके चेहरे पर खुशी हो। कुछ भी हो पर कोई भी देखे तो ऐसे लगे कि यह कम्बाइण्ड हैं। बाबा इन्हों की आँखों में है, चेहरे में दिखाई देता है, ऐसा कहे। बस यही कम्बाइण्ड रूप आपका देखकर माया भी डरती है। माया आवे भगाओ, इतनी मेहनत की ज़रुरत ही नहीं, वो कम्बाइण्ड देख करके सामने ही नहीं आयेगी। तो सभी खुशमिज़ाज़! सदा? क्योंकि हमारी शक्ल से लोग बाबा को देखेंगे इसलिए कभी कोई मूड ऐसा हो, तो बाबा कैसे दिखाई देगा? इसलिए बाबा के साथ रहो, मायाजीत होके बेफिक्र होके चलो क्योंकि हमारा साथी बहुत ऊँचा है। तो खुश रहना और खुशी बाँटना है लेकिन इसमें बाबा कहते हैं एक अक्षर कभी नहीं सोचना, कहना कौन-सा? कभी-कभी। इस अक्षर को बाबा को दे दो। सदा खुश और खुशी की कमाल, वो किसी चीज़ में नहीं है, जो खुशी में करामत है ना वो और किसी चीज़ में नहीं है। वो है खुशी जितनी भी आप बाँटो उतनी बढ़ती है। दूसरी, अन्य कोई भी एक चीज़ बाटेंगे तो एक रह जायेगी, लेकिन खुशी जितनी बाटेंगे उतनी बढ़ेगी तो खुशी की खुराक के लिए गाया हुआ है। अगर खुशी बढ़ानी हो तो बाँटना शुरू कर दो। तो खुश रहना है, खुशी देनी है, खुशमिज़ाज़ रहकर दिखाना है। बाबा का कभी भी फोटो निकालो तो सदा मुस्कराता हुआ...तो फॉलो फादर करना है ना। दिनचर्या अनुसार याद में बैठना है, कोई नहीं बैठता तो वो उनकी गलती, बाकी नियमानुसार हमारा बना हुआ है, संगठन में याद में बैठना है। और फिर कर्म करते कर्मयोगी अवस्था में रहना है। तो योगी माना बाबा का साथ है। भोजन के समय भी बाबा के साथ भोजन करो। ऐसे नहीं कि इतनी भूख लगी जो बाबा ही भूल जाये, अकेले तो खाना नहीं है। जिससे प्यार होता है उसके बिना नहीं खाया जाता है। तो कायदे ही हमारे ऐसे बने हुए हैं जो याद करने नहीं भी चाहें तो याद दिलाते हैं और रात्रि को चार्ट देखो याद किया? कर्मयोगी बने? कई कहते हैं वैसे याद रहता है, कर्मयोगी बनने में थोड़ा भूल जाता है लेकिन बाबा कहते हैं नवीनता ही यह है, आप कर्मयोगी बन कर्म करते याद में रहना। आपकी खुशी आपके चेहरे से दिखाई दे।